International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

स्त्री आत्मकथाओं में अभिव्यक्त ग्रामीण

डॉ0 रवीन्द्र कुमार सिंह
शोध–निर्देशक
सहायक आचार्य / विभागाध्यक्ष
हिन्दी विभाग, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय सिंगरामऊ, जौनपुर (उ0प्र0)

बृजेश कुमार यादव
शोधार्थी
हिन्दी विभाग, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय सिंगरामऊ, जौनपुर (उ0प्र0)

सारांश –

कौसल्या बैसंत्री जी अपने परिवार और समाज की पिछड़ी बस्ती के लोगों के बारे में बताती है। उनका महार समाज हिन्दू धर्म के भेदभाव से त्रस्त था। दैवी प्रकोप और चमत्कारों मे उलझा हुआ था लेकिन अब उनके समाज में जो बदलाव आया है। उसके बारे में वे कहती हैं कि, ''अब अधिकांश महार बौध्द हो गए हैं और उन्होंने इस अंधविश्वास और काल्पनिक देवी–देवताओं को पूजना छोड़ दिया है। माता के मंदिर की जगह अब यहाँ बौध्द मंदिर बन गया है।''[1] अब उनके बस्ती के लोग पुराना हिंसात्मक धर्म भूलकर बुद्ध के अहिंसा का मार्ग अपना रहे हैं तथा कर्मकाण्डों और अंधविश्वासों पर निर्भर न रहते हुए बुद्ध की प्रज्ञा को समझकर अपना विकास कर रहे हैं।

मुख्य शब्द– परिवार, भेदभाव, समाज, दैवी प्रकोप, अंधविश्वास, कर्मकाण्ड

****

चंद्रकिरण सौनरेक्सा जी अपने पिताजी द्वारा धर्म सम्बन्धी अभ्यास और तर्क करने से उनमें आये धार्मिक बदलाव के बारे में कहती हैं कि, ''पंजाब में स्वामी दयानंद जी के आर्यसमाज आंदोलन का उदय हुआ, जो सनातन हिन्दू धर्म के पाखंड व कर्मकाण्ड के विरुध्द समाज सुधार की दृष्टि से... क्रांति सिद्ध हुई। मेरे बाबा... इतने प्रभावित हुये कि वे आर्य समाज के उत्साही सदस्य बन गये, मूर्तिपूजक न रहने के कारण अपनी कोठी के शिवमंदिर की पूजा–अर्चना की व्यवस्था पूरी तरह, एक सनातनी सेठ के हाथ में सौंप दी।''[2] इस तरह हिन्दू धर्म के धार्मिक नियम और कर्मकाण्डों को नकारकर चंद्रकिरण जी के पिता ने आर्य समाजी विचारधारा अपनायी। उनके मरणोपरान्त भी उनकी तेरहवीं पर पिंडदान आदि न करते हुए परिवार ने उनके विचारों को बरकरार रखा। चंद्रकिरण जी इसके बारे में कहती हैं कि, ''तेरहवें दिन, बाबुजी की इच्छानुसार, अनाथालय के बच्चों को खाना खिलाया गया, और हवन हुआ।''[3] इस तरह पिंडदान आदि कर्मकाण्ड ब्राह्मणोंद्वारा न करते हुए, जरुतमंद अनाथालय के बच्चों को भोजन देने का सही काम किया गया। इस आर्य समाजी सुधारवादी नीति को कई लोगों ने स्वीकारा था। लेकिन वहा पर भी बुरे लोग क्या करते हैं और ऐसी संस्था को कैसे बदनाम करते हैं। इसके बारें में कृष्णा अग्निहोत्री जी बताती हैं। आर्य समाज

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

द्वारा चलनेवाले विद्यालय में जाकर कृष्णाजी धर्म का कार्य करना चाहती थी। वे जब अध्यक्ष बनकर काम कर रही थी, तो कुछ भ्रष्ट लोगों ने उन्हें काम करने नहीं दिया। तो वे स्वेच्छा से वहां से हट गई। इसके बारे में वे कहती हैं कि, ''मैंने आर्य समाज जैसी धार्मिक संस्था में भी जब भ्रष्टाचार देखा तो सचमुच बहुत दिनों तक व्यथित रही।''[4] इस तरह थोड़े–बहुत सुधार और परिवर्तन करनेवाली धार्मिक संस्था में भी कुछ लोग गड़बड़ी मचा देते हैं, ताकि फिर उस तरफ कोई न आए। क्योंकि जब कोई संस्था या संघटन बदनाम हो जाता है, तो अच्छे लोग उससे दूर ही रहते हैं।

भारत के विविध धर्मों के विविध त्योहार और उत्सव दिखाई देते हैं। कुछ तो संस्कृति को जीवित रखते हैं और समाज को फायदेमंद साबित होते हैं। लेकिन कुछ त्यौहार और उत्सव ऐसे हैं, जिनकी समीक्षा होनी चाहिए। इसी तरह सुशीला टाकभौरे जी 'रक्षाबंधन' नामक त्यौहार के बारे में मनुस्मृति का हवाला देते हुए कहती हैं कि – ''मनुस्मृति में स्त्रियों को हमेशा पिता, भाई, पति और पुत्रों के संरक्षण में रहने के निर्देश दिये गये हैं। स्त्रियों को शारीरिक और मानसिक रूप से कमजोर बनाकर रखा जाता था। 'रक्षा बंधन' भी ऐसा ही त्योहार है।''[5] इस तरह धार्मिक त्यौहार के नामपर स्त्री को पुरुषपर आश्रित रखा जाता है। जिसका सुशीला जी अपने हिसाब से खण्डन करती है। आज स्त्री पर जो अन्याय बलात्कार हो रहे हैं, उसमें पिता– भाई भी बलात्कार कर रहे हैं। तो आज कि स्त्री को ऐसे पिता और भाई से रक्षा की उम्मीद रखने के बदले इन शैतानों का खुद निपटारा करना होगा।

हिन्दू धर्म की जाति व्यवस्था, वर्णव्यवस्था मनुष्य–मनुष्य में बिखराव लाती है जातिगत विभाजन करती है तथा इसके नियमानुसार जीता जागता इनसान तुच्छ और गंदा माना जाता है। लेकिन इस धर्म में अजीव चीजों को भगवान बनाकर पूजा में नदी, पहाड़, पेड़, पौधे, गाय, साँप सभी को महत्व और सम्मान दिया जाता है। जाता है। हिन्दू धर्म की इस विडम्बना के बारे में सुशीला जी कहती हैं कि, ''हिन्दू धर्म लेकिन अछूत मनुष्यों को कोई स्थान नहीं, कोई सम्मान नहीं। उनके लिए कोई दया संवेदना नहीं? हिन्दू धर्म के आडम्बर में मिट्टी से बने पुतलों को भी भगवान की तरह पूजा जाता है मगर इनसानों को इनसान नहीं मानते यह हिन्दू धर्म की विडम्बना है।''[6] इस तरह के अमानवीय और हीन बर्ताव में लोग बदलाव चाहते हैं।

डॉ0 बाबासाहेब आंबेडकर जी ने हिन्दू धर्म के महार जाति का और हिन्दू धर्म का त्याग कर अपने सात लाख समाज भाई बहनों के साथ 14 अक्तूबर 1956 को नागपुर महाराष्ट्र में बौद्ध धम्म को अपनाया।

धर्म के नामपर गलत काम दुनिया में कई लोग हैं, जो खुद को धार्मिक 8 समझते हैं और धर्म के नामपर जो कर्म करते हैं, उन्हें सही मानते हुए चलते हैं। लेकिन उनमें बहुत सारे ऐसे काम होते हैं, जिन्हें सूक्ष्मता से देखने पर कुछ विरोधभास दिखाई देता है इसलिए हर एक मनुष्य को चाहिए की हम जो कर्म कर रहे हैं, उसका परिमार्जन करें। उसमें क्या सही है क्या गलत है, इसका अभ्यास करें।

पद्मा सचदेव जी बचपन में जब सहेलियों के साथ नवरात्रों का उपवास रखती थी, उस समय के उन उपवासों और खान–पान के बारे में वे कहती हैं कि, ''शाम को अपने अपने घर से खाना लाकर पूजा करके हम खाने बैठते। सुबह का व्रत होता। व्रत में खूब तर माल उड़ता, जैसे

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बिना मक्खन निकली लस्सी या दूध और फल। फिर शाम को खाने पर सब टूट पड़ती।''[7] व्रत और उपवास ऋषी मुनियों ने रखे थे, जो उपवास, उपवास ही होता था। इसी तरह विज्ञान भी उपवास का समर्थन करता है, हल्का फलो आहार, सादा भोजन पेट और शरीर की चरबी और अनिवार्य घटकों को सीमा में रखते हैं। लेकिन आम तौर पर हम ऐसे उपवास देखते ह, जो नाममात्र के लिए उपवास होते हैं। लेकिन उपवास के नाम पर अच्छी अच्छी चीजें खायी जाती हैं। इसलिए उपवास जो धार्मिकता से जुड़ा हैं, उसकी गरिमा को ध्यान में रखकर उपवास करना चाहिए।

कौसल्या वैसंत्री अपने परिवार की अज्ञानता और मूर्खता के बारे में बताती है। अब उनके बहन भाई जन्म लेने के कुछ साल बाद गुजर जाते थे, तो उनके माता पिता द्वारा किए गए निदंनीय कार्य के बारे में वे कहती है कि, ''बड़ी बहन जनाबाई के बाद लगातार एक भाई और दो बहनों की मृत्यु हो गई थी इसलिए आजी और माँ ने शिवजी भगवान से मंदिर के बाहर खड़े होकर प्रार्थना की और भगवान से मन्नत माँगी कि अगर मैं दस वर्ष की हो जाऊँगी और मेरे बाद जो बच्चे पैदा होंगे वे जीवित और स्वस्थ रहेंगे तो वह शिवजी के मंदिर में जाकर बकरे की बलि देगी।''[8] इस तरह आज भी आधुनिक युग में लोग अपने बच्चों की सलामती के नामपर देवी देवताओं को खुश करने के लिए बकरे और अन्य जानवरों की बलि देते हैं। इस तरह धर्म के नाम पर अधर्म का कार्य करते हैं, अपने सुख और शांति के लिए किसी और की जान ली जाती है।

धर्म, धर्म तो सभी करते हैं, लेकिन सच्चा धर्म कितने लोगों की समझ में आया है, यह देखनेवाली बात है। इसी तरह धर्म के नामपर कैसा विरोधाभास दिखाई देता है, इसके बारे में कृष्णा अग्निहोत्री जी कहती हैं कि, ''मन भर दूध–फल. मिष्ठान, नारियल, मेवा व रुपया शिव को चढ़ता था, चढता रहा, लेकिन भारत के गरीब बच्चे दूध को तरसते थे, तरसते रहे, तरसते हैं।''[9] यह एक उदाहरण देकर वे आगे कहती है कि, एक समय जब वे बग्घी में घुम रही थी, तो एक सिपाही ने कहा, ''मेमसाहब ये है विश्वनाथ मंदिर के पंडे, शहर के सर्वश्रेष्ठ रईसों में से एक सचमुच मेरा मुँह आश्चर्य से खुल गया धर्म का यह कैसा रूप है, जहां बाहर भिखारियों की भीड़ बढ़ही हैं। अंदर पुजारी पनप रहा है।''[10] सच्चा धर्म तो यह कहता है कि, भूखे, नंगे, गरीब के मुँह में निवाला डालो। लेकिन भारत में विपरीत स्थिति है, यहाँ संपन्न और हट्टे–कट्टे लोगों को धर्म के ठेकेदार मानकर पूजा और पाला पोसा जाता है लेकिन गरीब, भूखे लोगों के हाथ पर एक रूपया थमाते समय आदमी दस बार सोचता है।

'हादसे' आत्मकथा में रमणिका गुप्ता जी बताती हैं, एक समय मजदूर हड़ताल पर चले गये थे और उनके घर में खाने को दाना न था। ठीक उस समय राजनीतिज्ञों और मालिकों ने बड़ा यज्ञ का आयोजन किया था। पंडे–पुरोहितों की झोलियाँ भरनेवाले और अज्ञान में गलत जगह पर धन लुटानेवाले लोगों को रमणिका गुप्ता जी कुछ सलाह देते हुए कहती हैं कि, ''यज्ञ में इतना सामान नष्ट करने की बजाए यदि एक दो ट्रक चावल मजदूरों को भिजवा दे तो वे और डटकर लडेंगे। यह भिक्षुओं को खिलाने से तो बेहतर होगा।''[11] इस तरह बड़ी–बड़ी बाते करने वाले राजनीतिज्ञों और पैसेवालों को रमणिका जी भूखे, मजदूरों को भोजन दे कर सच्चा कार्य करने की सलाह देती हैं, बजाए किसी संपन्न व्यक्ति को दान धर्म करने क। इस तरह भारत में धर्म के नाम पर अनावश्यक जगह पर खर्च किए जाते हैं, लेकिन जरूरतमंदों एवं विपदा में फंसे लोगों के लिए कुछ नहीं किया जाता।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अपना धर्म सर्वमान्य हो ऐसी चाह हम जानते हैं भारत में बहुधर्मीय लोग रहते हैं। यहाँ पर एक साथ कई धर्म प्रचलित हैं, जिनका प्रचार प्रसार यहाँ होता रहता है कभी अगर कोई मनुष्य पुराने धर्म से उन्मुख होकर किसी नये धर्म की ओर आकर्षित हो जाए, या किसी धर्म को अपने तरीके से मानने लगे, तो उस धर्म को माननेवाले आम लोगों के दिल को ठेस पहुँचती है। जिससे उन लोगों के सम्बन्धों में तनाव निर्माण होता है, या कुछ गलतफहमियाँ तैयार हो जाती है।

मन्नू भण्डारी जी जब साहित्यिक काम काज से उज्जैन गयी थी, वहाँ उनके सहयोगी मंदिरो, तीर्थ स्थानों में जा रहे थे, लेकिन मन्नू जी का उनके साथ न जाने से लोगों में जो प्रतिक्रिया बनी उसके बारे में वे कहती हैं कि, ''मन्दिरों या तीर्थ स्थानों में जाने में मेरी न कभी काई रुचि रही न संस्कार। इसलिए बार–बार के आग्रह के बाद भी मैंने जब महाकालेश्वर के मन्दिर जाने की कोई उत्सुकता नहीं दिखाई तो उन लोगों को निराशा से ज्यादा आश्चर्य हो रहा था। जिस मन्दिर के दर्शन के लिए लोग दूर–दूर से आते हैं, यहाँ रहकर भी इनकी ऐसी उदासीनता।''[12] हालांकी मन्नू जी धार्मिक लेकिन उनके साथवाले लोगों में गलतफहमी तैयार हुई थी, कि वे हिन्दू होकर क्यों इनसान थी, लेकिन मन्दिर या तीर्थ स्थानों पर जाना उन्हें अच्छा नहीं लगता था। नहीं आ रही। इस तरह लोग ये समझने को तैयार नहीं होते भई आखिर जिसका उसका अपना नजरिया है।'

चंद्रकिरण सौनरेक्सा जी अपने पुर्वज गणेशी लाल जी के बारे में बताती हैं, गणेशी लाल हिन्दू धर्म के कर्मकाण्डों से तंग आकर आर्य समाजी विचारों को अपनाते हैं। लेकिन यह देखकर उनकी पत्नी और माँ कट्टर सनातनी हिन्दू एवं कर्मकाण्डी गृह महिलाएँ होने के कारण उनके सामने मंदिरों में आती, व्रत त्यौहार पूरे सनातनी रीति–रिवाजों के साथ मनाती रहती थी। इसके बारे में चंद्रकिरण जी कहती है कि, लक्ष्मी के साथ उनका तालमेल कभी जमा ही नहीं। जीवन की शांति को घुन लग गया। राजकुँवर ने गणेशी लाल का रौब तो नहीं माना, बल्कि चिढाने के लिए घर में सारे सनातनी रीति–रिवाज और भी जोर शोर से निभाने लगी।''[13] इस तरह धार्मिक भाव एवं कट्टरवाद से लोगों में समझदारी के बजाए एक–दूसर के प्रति घृणा पैदा होती हैं। जो सामाजिक वातावरण को कभी कभी खराब कर देती है।

विविधि तरीकों से धर्म का प्रचार–प्रसार दुनियाभर में विविध धर्म और धर्म नियमों को माननेवाले लोग रहते हैं। हर एक को अपना धर्म सबसे सुंदर और अच्छा लगता है। इस कारण लोग अपने अपने धर्म के प्रचार प्रसार कार्य में जुटते हैं। इसके लिए लोग विविध योजनाएँ और तरीके ढूँढते रहते हैं। कभी रुपए–पैसे, धन का लालच देकर, या किसी जरूरतमंद की मदद करके धर्म की ओर आकर्षित किया जाता है या कभी हर और भय निर्माण करके भी धर्म का महत्व सिद्ध किया जाता है।

कौसल्या वैसंत्री जी अपने बचपन के समय के बस्ती के किस्से सुनाती है। जब अछूतों की बस्तियों में खिश्चन मिशनरी को चलानेवाली नर्स गरीब, आर्थिक रुप से कमजोर अनपढ़ लोगों को कुछ भेंट आदि देकर धर्म का प्रचार करती थी। इसके बारे में कौसल्या जी कहती हैं कि, ''कभी कभी ईसाई लोग भी बस्ती में आकर बड़े–बड़े पोस्टर लगाकर यीशू मसीह के बारे में बताते थे। बच्चे बूढ़े सब देखने आते थे। हमारी बस्ती में ईसाई भी थे जो बहुत गरीब थे। कोई ईसाई बने या न बने वे अपना प्रयत्न जारी रखते और बार बार बस्ती में आकर काम करते थे। अम्माजी दवा,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कपड़े वगैरह लेकर आती थी।''[14] इस तरह खिश्चन मिशनरी के लोगों को आज भी हम समाज में खिश्चन धर्म का प्रचार प्रसार एवं समाज की सेवा करते हुए देखते है। इस काम के लिए कई लोगों को तनख्वाह भी मिलती है गरीब एवं दुखी लोग इनके प्रेम और उपहारों को देखकर आकर्षित होते हैं। भारत में तथा महाराष्ट्र में ऐसे कई गाँव है, जहाँ इस तरह खिश्चन धर्म का प्रसार रूपए–पैसे और सेवा करके किया जाता है।

हिन्दू धर्मशास्त्रों ने ब्राह्मणों, पुरोहितों को ऊँचा स्थान प्रदान किया है। ब्राह्मणा के वाक्य को देव वाक्य माना जाता है। उनका अपमान करना या उनकी आज्ञा की अवहेलना करने कि हिम्मत किसी में नहीं दिखती, ऐसा करनेवालो के लिए उन्होनें डर और भय निर्माण कर रखा है। इसके बारे में पद्मा सचदेव जी कहती हैं कि, ''एक बार दादाजी मंदिर में पूजा कर रहे थे। महाराजा प्रतापसिंह वहाँ से गुजरे। उन्होंने देखा और मंदिर में दर्शन करने चले गये। आकर दादाजी को प्रणाम किया तो कोध में दादाजी ने कहा पहले ब्राह्मण को प्रणाम करना चाहिए, फिर भगवान को। कोध में दादाजी ने कहा जाओ, तुम निसंतान मरोगे।''[15] इस तरह बाह्मण कहते हैं कि भगवान से पहले हमारे दर्शन करने चाहिए, नहीं तो ऐसी बद्दुआ दी जाएगी। सोचनेवाली बात यह है, इस तरह के लोगों को और नियमों को लोग क्यों ढोते रहते हैं। क्या इस तरह से शाप देनेवाले लोग सच्चे धर्मगुरु हो सकते हैं। किसी का सर्वनाश हो, कोई विपदा में फँसे ऐसा शाप देनेवाला अच्छा आदमी नहीं हो सकता तो भला वह पूजनीय कैसे हो सकता है?

इस तरह सुशीला टाकभौरे जी भी अपने बचपन का किस्सा सुनाती हैं। उनके पास पड़ोस में महिलाएँ संतोषी माता का व्रत करती थी? देवी के प्रचार प्रसार और डर को जताने के लिए लोग जो कृत्य करते थे उसके बारे में वे कहती हैं कि, ''लोग संतोषी माता की भक्ति और चमत्कार के विषय में लिखकर पोस्ट कार्ड गरीब, अछूतों और बहुजनों के घर भेजते थे वे व्रत–पूजा की महिमा बताने के साथ यह भी लिखते थे कि तुम भी सोलह घरा में ऐसे पत्र भेजों नहीं तो देवी के क्रोध से तुम बर्बाद हो जाओगे।''[16] इस तरह की गलत बातें लिखकर भोली भाली जनता को भयभीत करके कुछ लोग अपने धर्म और देवता का नाम वड़ा करते हैं। गरीब लोग ऐसी झूठी बातों से डरकर अपना पेट काटकर या कर्जा निकालकर वह कार्य पूरा करते हैं, जो कि सरासर गलत बात हैं। ऐसी बातों पर कानूनन प्रतिबंध लगना चाहिए।

मानवतावादी धर्म : बीमार, दुखी, पीडित, मजबूर जीवों को मदद करना एवं प्रेम, मैत्री और सद्भाव से प्राणिमात्र की सेवा करना हि सच्चा धर्म माना जाता हैं। इस तरह जरुरत मंद और असहाय की सेवा मदद कर सच्चे धर्म का पालन करनेवालों के उदाहरण समाज में मिलते हैं।

अजीत कौर जी के नानाजी सिक्ख धर्म की शिक्षा देते हुए जो कुछ बताते थे। इसके बारे में अजीत जी कहती हैं कि, ''सिक्खी का मार्ग सेवा और त्याग का मार्ग है। अपने आपको कुर्बान कर देने का मार्ग है यह।... शरीर को कष्ट देकर तपस्या करने की कोई जरूरत नहीं है इस मार्ग पर। यह मार्ग बहुत ही सहज और सरल है। बस, उस ईश्वर से प्रेम करो जिसने हमें बनाया है। वह हमारी माँ भी है और पिता भी। प्रेम की राह पर चलकर उस तक पहुँचा जा सकता है।''[17] इस तरह प्रेम लूटाकर और मानव सेवा करके सच्ची ईश्वरसेवा की जा सकती है। इसके लिए किसी कर्मकाण्ड, या आडम्बर कि जरुरत नहीं है। कौसल्या बैसंत्री जी उनकी बस्ती में आनेवाली खिश्चन

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भिक्षुणियों की मानव सेवा के बारे में कहती है कि, ''वे वस्ती में घूमकर बच्चों की आँखे धोकर दवा डालती थीं। कान बहता होता तो उसको साफ करके उसमें दवा डालती थी खाँसी, बुखार, दस्त, कै वगैरह की भी दवा देती थी।''[18] इस तरह खिश्चन भिक्षुणियाँ और ब्रदर्स ईसा मसीह के मानव सेवा और प्रेम के संदेश को सिर आँखों पर रखकर दिन रात इस कार्य में लगे रहते हैं। मानव सेवा जो सच्चा धर्म है, जिसे वे निभाते चलते हैं।

निष्कर्ष –

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि, प्रकृति, सृष्टि की रचयिता है। निसर्ग वह शक्ति है जो सारे जीव जन्तुओं का निर्माण एवं विनाश करता है। सभी जीवों को जीने के लिए कुदरत का एक नियम है, वह नियम ही धर्म है। मनुष्य इसको 'मानव धर्म' भी कहता है। सभी जीवों के साथ प्रेम, सद्भाव, करुणा रखना, सबका हित एवं मंगल सोचना ही धर्म है। जैसे बुद्ध का नियम है, 'सारे पाप कर्मों का त्याग करना एवं कुशल कर्मों का संचय करना सच्चा धर्म है। मनुष्य जीवन में धर्म की उतनी ही जरुरत है, जितनी जिवित रहने के लिए अन्न, वायु और जल की। सच्चा मानव धर्म जान–समझकर सारे विश्व को, मानव धर्म प्रस्थापित करने के लिए प्रयास करने चाहिए जो सभी का मंगल और सभी का सुख चाहता है।

सन्दर्भ

1. शिकंजे का दर्द सुशीला टाकभौरे, प्र०सं०, 2011, पृ०–35.
2. गुड़िया भीतर गुडिया मैत्रेयी पुष्पा, प्र०सं०, 2008, पृ०–72.
3. वही, पृ०–119.
4. शिकंजे का दर्द सुशीला टाकभौरे, प्र०सं०, 2011, पृ०–175.
5. गुडिया भीतर गुडिया मैत्रेयी पुष्पा, प्र०सं०, 2008, पृ०–119.
6. वही, पृ०–119.
7. शिकंजे का दर्द सुशीला टाकभीरे, प्र०सं०, 2011, पृ०–224.
8. गुडिया भीतर गुडिया मैत्रेयी पुष्पा प्र०सं०, 2008, पृ०–215.
9. लगता नहीं है दिल मेरा कृष्णा अग्निहोत्री, प्र०सं०, 2010, पृ०–138.
10. कूड़ा–कबाड़ा – अजीत कौर, प्र०सं०, 1999, पृ०–160.
11. वही, पृ०–161.
12. वही, पृ०–161.
13. और... और... औरत – कृष्णा अग्निहोत्री, प्र०सं०, 2010, पृ०–150.
14. वही, पृ०–159.
15. कस्तूरी कुण्डल बसै– मैत्रेयी पुष्पा, प्र०सं०, 2002, पृ०–303.
16. और... और... औरत कृष्णा अग्निहोत्री, प्र०सं०, 2010. पृ०–69.
17. एक कहानी यह भी मन्नू भंडारी, प्र०सं०, 2007, पृ०–17.
18. दोहरा अभिशाप कौसल्या संत्री, प्र०सं०, 1999, पृ०–35.